श्री राम
परमात्मने श्री रामायः नमः
व्यास पूजा के उपलक्ष्य
में
संदेश

14 जुलाई, 1940 के शुभ सन्देश में परम पूज्य बाबा(स्वामी सत्यानन्द जी महाराज) फरमाते है : व्यास पूजा का पुण्य पर्व हमारे धर्म में, आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिये नियत है। अर्थात परम श्रद्वेय स्वामी जी हमारे आदि गुरु हैं और हम सब उनके शिष्य।

उन्होंने कोई सांसारिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किया, इस लिये बाबा तो बाबा ही हैं।

स्वामी जी ने कभी अपने आप को गुरु नहीं कहा और न ही चाहा कि कोई उन्हें गुरु माने, कभी अपने पांव को छूने नहीं दिया, कभी अपनी पूजा नहीं करवाई, कभी अपने निर्वाह के लिये किसी से कुछ मांगा नहीं, यहां तक कि गुरु मन्त्र देने के बाद भी गुरु दक्षिणा के रुप में किसी भी प्रकार की भेंट स्वीकार नहीं की, अपितु यही प्रण लिया कि साधक नाम का जाप-ध्यान नित्य करते रहेंगे, कभी छोड़ेंगे नहीं। ये सब कुछ उन्होंने अन्त समय तक निभाया, अतः बड़े गर्व के साथ कहा करते, "जब सत्यानन्द शरीर छोड़ेगा, बैंक में एक पैसा, जमीन का एक टुकड़ा या चढ़ावे का एक भी बादाम उसके पास नहीं मिलेगा।" ऐसा करके पूज्य बाबा तो अपनी गुरुआई गौरवपूर्ण निभा गये, क्या हम शिष्यों ने भी अपनी शिष्यता निभाई ? उन्हीं के अनुरुप शिष्य बन सके या नहीं ? अपने अपने गरेबान में झांक कर देखें हम कहां हैं ? कैसे हैं हम ? Where do we stand ? Evaluate करने का दिन है। कैसे शिष्य हैं हम ? शिष्य उसी को कहते हैं, जो गुरु की आज्ञा के अनुसार चलता है या आज्ञा में रहता है। तनिक अपने आप को पूछ कर देखें,

क्या उन की आज्ञा पालन कर रहे हैं, ? एक ही बात कही थी, उन्होंने कि राम नाम का जाप करना, ध्यान में बैठना, हम वह भी नहीं कर रहे। दीक्षा के समय वायदा ऊंचा बुलवा कर लिया जाता है। बाबा कहते, "मैं कभी आज्ञा नहीं करता, मैं परामर्श देता हूं।" आज का दिन यह याद करने का दिन है।

कोई कहता, मैंने इतना जाप किया है, कहते और अधिक जाप करो, किसी को कहते, अब आप ध्यान में बैठा करो या किसी को कि आप का जाप, ध्यान ठीक चल रहा है, अब आप गीता जी का पाठ किया करो। दोनों महाराजों ने हर समस्या के समाधान हेतु जप एवं ध्यान पर ही बल दिया है। क्या हम उन की आज्ञा मानते हैं ? क्या हम गुरु जनों को समर्पित हैं, या भटकना अभी भी बनी हुई है, यदि ऐसा समर्थ गुरु पाकर भी संतोष नहीं मिला तो यह भटकाव इस जिन्दगी में तो कभी खत्म नहीं होने वाला।

क्या स्वयं राम नाम जाप–ध्यान कर रहे हैं तथा औरों को भी जाप-ध्यान की प्रेरणा दे रहे हैं ? क्या स्वामी जी के ग्रन्थों का स्वयं अध्ययन कर रहे हैं तथा औरों को स्वाध्याय के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं ? क्या दूसरों के सुख-दुःख में भागी बनते हैं या अपने आप में मस्त हैं ?

क्या समर्पित हो गये हैं या नहीं ? Are you dedicated to Guru ? क्या अभी तक मन स्थिर हुआ कि नहीं ? क्या बुद्वि स्थिर हुई कि नहीं, क्या गुरु पाकर जो पाना चाहिए था पाया या नहीं ? क्या मन उनके श्री चरणों में अर्पित कर दिया या अभी अपने पास ही रखा है ? तभी कामना, तृष्णा, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष-घृणा आदि दोषों से छुटकारा नहीं पा सके — क्योंकि भण्डार तो भरा पड़ा है। आप तो शरीर धुलवा रहे हो, अपना भीतर अर्पित ही नहीं किया।

कहे नानक गुरु बन्धन काटे, हम जैसे भी हैं सम्भालियेगा। कैसे काटे, क्या हम काटने देते हैं ? क्या अभी तक गुरु महाराज से लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिये ही आशीर्वाद मांग रहे हैं, या अलौकिक सुख की खोज के लिये भी तड़प

पैदा हुई है ?

क्या हम खून चूसने वाले शिष्य तो नहीं ? ऐसा शिष्य, शिष्य कहलाने के योग्य नहीं। जो यह चाहते हैं, जब भी मिलना चाहे, मिले। अपने अनुसार गुरु को चलाने वाले शिष्य, न कभी इन से कुछ पा सकेंगे न परमात्मा से पा सकेंगे। जो रक्त चूसने वाले, मनमानी करने वाले है, इनसे कुछ पा नहीं सकेंगें।

महात्मा बुद्ध के चचेरे भाई आनन्द ने शिष्यत्व स्वीकार करने के लिये चार शर्तें रखीं।

१. जहां भी आप रहोगे मैं भी वहीं रहूंगा।

२. जहां भी आप जाओगे मैं भी वहीं जाऊंगा।

३. जिस वक्त भी मैं मिलना चाहूंगा, आपको मिलना होगा, आप यह नहीं कहोगे कि आप के मौन का समय है।

४. जिस वक्त भी किसी को मिलाना चाहूंगा आप यह नहीं कहोगे, एकान्तवास का समय है।

महात्मा बुद्ध ने तो ये शर्तें सारी जिन्दगी निभाईं, आनन्द उमर भर बड़े भाई होने के अभिमान में रहे और कुछ न पा सके।

यह भाई-बहन, पिता-पुत्र, ससुर-बहू का मार्ग नहीं है, यह तो गुरु-शिष्य का मार्ग है। यह दिन यही सम्बन्ध याद करने का दिन है।

अच्छा साधक अपने पात्र को पाने के लिये, ग्रहण करने के लिये सदा तैयार रखता है। क्या हम ऐसे हैं ? आनन्द जैसे तो बहुत मिल जाते हैं। शिष्य नहीं मिलता। शिष्य बनना ही मुशकिल है।

गुरु की परिभाषा है — गुरु वह जो प्रत्येक शिष्य को गुरु के समान ऊंचा उठा दे, संत वह जो सब को संत बना दे, साधु बना दे। भीतर से हाथ रखता है और बाहर से चोट मारता है।

स्वामी जी महाराज आपका धन्यवाद शब्दों में नहीं किया जा सकता, जो

याद दिला रहे हो, क्या हम अच्छे शिष्य हैं ? क्या हम ऐसे हैं कि आप स्वयं कह सको कि यह है मेरा अपना ? बाबा कोई तो ऐसा शिष्य बनाओ, जिसे आप अपना कह सको। ऐसे तो बहुत मिलते हैं ,जो कालख पोतने वाले होंगे।

कृपा करो हम पर, हम तो प्रशंसा के दास हैं, यश-मान के दास विषय-वासना के दास हैं। रक्षा करो — त्राहिमाम त्राहिमाम। पाहिमाम, पाहिमाम। इन राक्षसों से प्रभु आप ही बचा सकते हैं। हनुमान जी जैसे शिष्य ने भी राम जी से यही कहा, यह काम आप ही कर सकते हैं। राम जी ने कहा, "हनुमान सारी लंका को तो अकेले ही जला कर आगये थे। तब तो मेरी सहायता मांगी नहीं।" बहुत अच्छा उत्तर देते हैं हनुमान जी, " प्रभु !सारी लंका जलाने में तो मैं अकेला ही काफी था। रावण और सभी राक्षसों को मैं मार सकता था परन्तु इस प्रशंसा रुपी राक्षस से तो मैं भी भयभीत हूं। आप ही रक्षा कर सकते हैं। मेरे बस की नहीं।" हमें तो भूख ही प्रशंसा पाने की है।

आप आशीर्वाद दें बाबा कि हम आपके अच्छे शिष्य बन सकें, नौकर बन सकें, चेरे बन सकें। आशीर्वाद दीजिये।

नमो नमः गुरु देव तुमको नमो नमः। नमो नमः महाराज तुमको नमो नमः।

आज के इस मांगलिक दिवस पर पुनः बधाई हो, मेरे गुरु महाराज जहां जहां भी आप के परिवार के सदस्य बैठे हैं, मेरी मंगल कामनायें एवं अपने आशीर्वाद पहुंचाने की कृपा करें। आज का दिन अतिशय मंगलमय हो।

जय जय राम

शुभाकांक्षी

(विश्वामित्र)